SHODHPATRA: INTERNATIONAL JOURNAL OF SCIENCE AND HUMANITIES
E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 2, Issue- 10 | October 2025

क्षेत्रीय भारतीय सिनेमा के सामने चुनौतियां: भोजपुरी सिनेमा के संदर्भ में एक अध्ययन

अखिलेश यादव [1], डॉ. दिवाकर अवस्थी [2]
[1] शोधार्थी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग छत्रपति शाहू जी महराज विश्वविद्यालय कानपुर
[2] असिस्टेंट प्रोफ़ेसर पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग छत्रपति शाहू जी महराज विश्वविद्यालय कानपुर

सारांश

यह शोध पत्र भारतीय क्षेत्रीय सिनेमा की जटिलताओं और संभावनाओं का विश्लेषण करता है, जिसमें विशेष ध्यान भोजपुरी सिनेमा पर केन्द्रित है। भारत जैसे बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश में क्षेत्रीय सिनेमा न केवल मनोरंजन का एक सशक्त माध्यम है, बल्कि वह स्थानीय संस्कृति, परंपरा और सामाजिक मूल्यों का वाहक भी है। भोजपुरी सिनेमा, जिसकी शुरुआत 1963 में सामाजिक फिल्म "गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो" से हुई थी, आज एक विशाल दर्शकवर्ग और उत्पादन क्षमता के साथ एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्रीय फिल्म उद्योग बन चुका है। इस शोध का उद्देश्य भोजपुरी सिनेमा के माध्यम से क्षेत्रीय सिनेमा के समक्ष मौजूद प्रमुख चुनौतियों की पहचान करना, उनका विश्लेषण करना और उनके समाधान के संभावित उपाय प्रस्तुत करना है। अध्ययन में यह पाया गया कि भोजपुरी सिनेमा को सीमित आर्थिक संसाधनों, गुणवत्ता की कमी, अश्लीलता की बढ़ती प्रवृत्ति, वितरण के अभाव और महिला पात्रों के कमजोर चित्रण जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इन कारणों से सिनेमा की सामाजिक छवि और स्वीकार्यता प्रभावित हुई है।

हालांकि, भोजपुरी सिनेमा ने क्षेत्रीय लोककला, भाषा और संस्कृति को संरक्षित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसने अनेक सामाजिक मुद्दों को भी मंच प्रदान किया है, यद्यपि उनका प्रभाव अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुँच पाया है। यह सिनेमा युवाओं को अपनी जड़ों से जोड़ने और सांस्कृतिक गर्व का संचार करने का कार्य करता है, लेकिन साथ ही यह भी आवश्यक है कि इसके कंटेंट में नैतिकता और कलात्मकता बनी रहे। भविष्य में भोजपुरी सिनेमा की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि वह किस हद तक अपनी रचनात्मकता, तकनीकी गुणवत्ता और सामाजिक उत्तरदायित्व को बनाए रखता है। राज्य और निजी संस्थानों से सहयोग, डिजिटल प्लेटफॉर्म का प्रभावी उपयोग, महिला फिल्मकारों का सशक्तिकरण और वैश्विक मंचों पर भागीदारी जैसे उपाय इसके भविष्य को उज्ज्वल बना सकते हैं।

1. प्रस्तावना

भारतीय सिनेमा का परिदृश्य अत्यंत विविधतापूर्ण है, जिसमें बॉलीवुड के अलावा अनेक क्षेत्रीय सिनेमा उद्योग सक्रिय हैं। इनमें तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़, बंगाली, मराठी और भोजपुरी सिनेमा प्रमुख हैं। क्षेत्रीय सिनेमा न केवल स्थानीय भाषा और संस्कृति को प्रतिबिंबित करता है, बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था और रोजगार सृजन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भोजपुरी सिनेमा का इतिहास 1960 के दशक से शुरू होता है, जब 'गंगा मईया तोहे पियरी चढ़ाईबो' (1963) पहली भोजपुरी फिल्म के रूप में रिलीज़ हुई थी। हालांकि, इसका वास्तविक विकास 1990 के दशक के अंत और 2000 के दशक की शुरुआत में हुआ, जब मनोरंजन के क्षेत्र में नए अवसर खुले और प्रौद्योगिकी ने फिल्म निर्माण को अधिक सुलभ बना दिया।

आज, भोजपुरी सिनेमा विभिन्न चुनौतियों का सामना कर रहा है। यह शोधपत्र इन चुनौतियों का विश्लेषण करता है और समाधान के संभावित मार्गों पर प्रकाश डालता है।

2. भोजपुरी सिनेमा का विकास और वर्तमान स्थिति

E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 2, Issue- 10 | October 2025

2.1 ऐतिहासिक विकास

भोजपुरी सिनेमा का विकास निम्नलिखित चरणों में देखा जा सकता है:

1. प्रारंभिक चरण (1963-1980): इस अवधि में केवल कुछ ही भोजपुरी फिल्में बनीं, जिनमें से अधिकांश सामाजिक-सांस्कृतिक विषयों और लोक कथाओं पर आधारित थीं।
2. मंदी का दौर (1980-1995): इस अवधि में भोजपुरी फिल्मों का निर्माण काफी कम हो गया था, क्योंकि दर्शकों का आकर्षण हिंदी फिल्मों की ओर बढ़ गया था।
3. पुनर्जागरण (1996-2010): इस अवधि में "साइयां हमार" और "ससुरा बड़ा पैसेवाला" जैसी व्यावसायिक सफल फिल्मों के साथ भोजपुरी सिनेमा में पुनरुत्थान आया। रवि किशन, मनोज तिवारी, और दिनेश लाल यादव 'निरहुआ' जैसे अभिनेताओं ने इस उद्योग को नई पहचान दिलाई।
4. आधुनिक युग (2011-वर्तमान): इस अवधि में भोजपुरी फिल्मों की संख्या में वृद्धि हुई है, लेकिन साथ ही गुणवत्ता और वितरण से संबंधित चुनौतियां भी बढ़ी हैं।

भोजपुरी फिल्मों के लिए उपलब्ध बजट अक्सर बॉलीवुड या अन्य प्रमुख क्षेत्रीय सिनेमा जैसे तमिल या तेलुगु की तुलना में बहुत कम होता है। यह अंतर फिल्म की गुणवत्ता, तकनीकी पहलुओं और विपणन क्षमताओं को प्रभावित करता है।

उद्योग	औसत फिल्म बजट (करोड़ रुपये में)
बॉलीवुड	50-100
तमिल	30-50
तेलुगु	25-40
भोजपुरी	2-5

2.2 वर्तमान परिदृश्य

वर्तमान में, भोजपुरी सिनेमा एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ा है। इसकी कुछ प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

1. उत्पादन परिमाण: प्रति वर्ष लगभग 60-80 भोजपुरी फिल्में बनती हैं, जो किसी भी क्षेत्रीय भाषा के लिए एक उल्लेखनीय संख्या है।
2. बजट सीमाएं: अधिकांश भोजपुरी फिल्में कम बजट में बनाई जाती हैं, औसतन 1-3 करोड़ रुपये के बीच।
3. वितरण माध्यम: भोजपुरी फिल्मों की उपलब्धता का वितरण निम्न प्रकार है:

- सिनेमाघर: 10%
- मल्टीप्लेक्स: 5%
- ओटीटी प्लेटफार्म: 5%
- टेलिविज़न: 80%

E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 2, Issue- 10 | October 2025

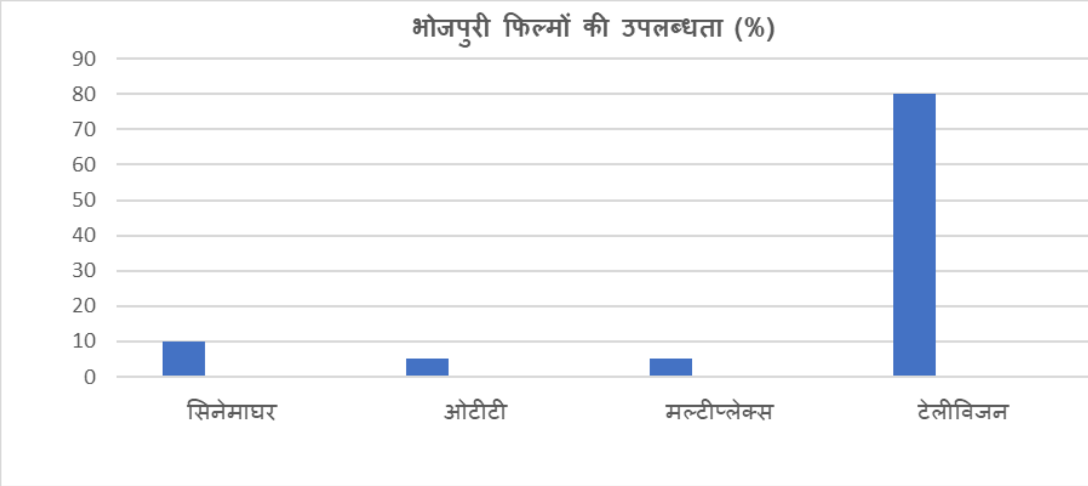

4. दर्शक वर्ग: भोजपुरी फिल्मों के प्रमुख दर्शक ग्रामीण और छोटे शहरों के निवासी हैं, जिनमें अधिकांश निम्न और मध्यम आय वर्ग के लोग शामिल हैं।

3. भोजपुरी सिनेमा के समक्ष प्रमुख चुनौतियां

3.1 वितरण संबंधी चुनौतियां

भोजपुरी भाषी क्षेत्रों में सिनेमाघरों की कमी एक प्रमुख समस्या है। पिछले दशकों में, अनेक एकल स्क्रीन थिएटर बंद हो गए हैं, जबकि मल्टीप्लेक्स मुख्य रूप से बड़े शहरों तक ही सीमित हैं। आंकड़ों के अनुसार, बिहार में प्रति 10 लाख लोगों पर केवल 0.8 स्क्रीन हैं, जबकि राष्ट्रीय औसत 8 स्क्रीन प्रति 10 लाख है।

मल्टीप्लेक्स नेटवर्क भोजपुरी फिल्मों को पर्याप्त स्क्रीन स्पेस नहीं देते हैं, क्योंकि वे हिंदी और अंग्रेजी फिल्मों को प्राथमिकता देते हैं। वर्तमान आंकड़ों के अनुसार, भोजपुरी फिल्में केवल 5% मल्टीप्लेक्स स्क्रीन पर रिलीज़ होती हैं।

प्रमुख ओटीटी प्लेटफार्म जैसे नेटफ्लिक्स, अमेज़न प्राइम और डिज़्नी+ हॉटस्टार पर भोजपुरी फिल्मों की उपस्थिति बहुत कम है। आंकड़ों के अनुसार, केवल 5% भोजपुरी फिल्में ओटीटी प्लेटफार्म पर उपलब्ध हैं।

3.2 गुणवत्ता संबंधी चुनौतियां

अधिकांश भोजपुरी फिल्में कम बजट में बनाई जाती हैं, जिससे सिनेमेटोग्राफी, साउंड डिज़ाइन, और विशेष प्रभावों की गुणवत्ता प्रभावित होती है। तुलनात्मक अध्ययन बताते हैं कि औसत भोजपुरी फिल्म का तकनीकी मानक अन्य क्षेत्रीय सिनेमा जैसे तमिल या मलयालम से काफी पीछे है।

बहुत सी भोजपुरी फिल्में एक ही प्रकार के कथानकों और विषयों पर केंद्रित होती हैं, जिसमें अधिकतर रूढ़िवादी यौन संदर्भ, हिंसा और कमज़ोर महिला चरित्र शामिल होते हैं। इस प्रकार की फिल्में मुख्यधारा के दर्शकों को आकर्षित करने में विफल रहती हैं और भोजपुरी सिनेमा की छवि को नुकसान पहुंचाती हैं।

3.3 वित्तीय चुनौतियां

भोजपुरी फिल्म निर्माताओं को पर्याप्त वित्तपोषण प्राप्त करने में कठिनाई होती है। बड़े स्टूडियो और निवेशक इस क्षेत्र में निवेश करने से हिचकते हैं, जिससे अधिकांश फिल्में स्वतंत्र निर्माताओं या छोटे वित्त पोषकों पर निर्भर रहती हैं।

E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 2, Issue- 10 | October 2025

सिनेमाघरों की कमी और पायरेसी के कारण, भोजपुरी फिल्में पर्याप्त बॉक्स ऑफिस कलेक्शन नहीं कर पाती हैं। औसत भोजपुरी फिल्म 1-2 करोड़ रुपये का कलेक्शन करती है, जो लागत को कवर करने के लिए पर्याप्त नहीं होता।

3.4 डिजिटल परिवर्तन की चुनौतियां

भोजपुरी फिल्म उद्योग में नवीनतम प्रौद्योगिकियों और डिजिटल उपकरणों के उपयोग का ज्ञान सीमित है। अधिकांश निर्माता और तकनीशियन पारंपरिक तरीकों से फिल्म निर्माण में लगे हुए हैं।

भोजपुरी फिल्म निर्माता सोशल मीडिया और डिजिटल मार्केटिंग का प्रभावी ढंग से उपयोग नहीं कर पाते हैं, जिससे उनकी पहुंच सीमित हो जाती है।

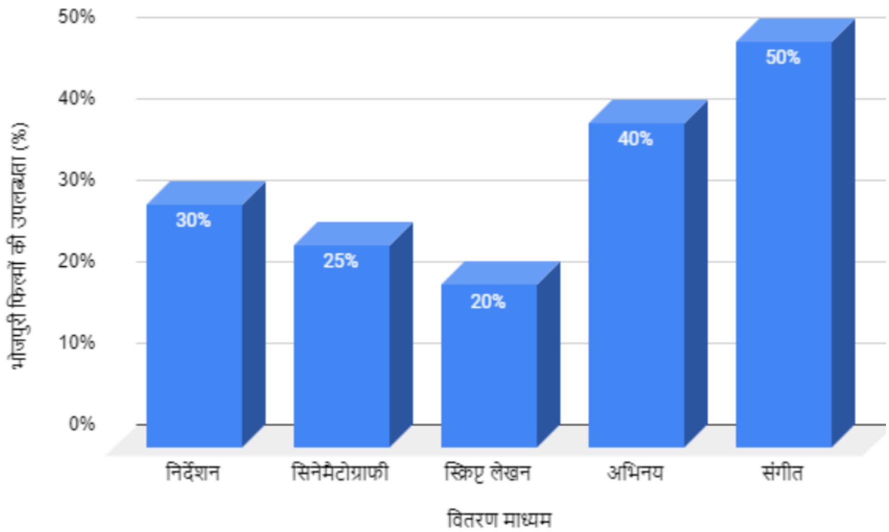

3.5 सामाजिक और सांस्कृतिक चुनौतियां

भाषाई अवरोध: भोजपुरी भाषा की प्रकृति और इसके विभिन्न उपभाषाएँ (मगही, अंगिका आदि) अखिल भारतीय दर्शकों के बीच इसकी पहुंच को सीमित करती हैं।

सामाजिक प्रतिष्ठा: भोजपुरी फिल्मों की निम्न सामाजिक प्रतिष्ठा एक बड़ी चुनौती है। बहुत से लोग भोजपुरी फिल्मों को निम्न गुणवत्ता वाला मनोरंजन मानते हैं, जिससे शिक्षित मध्यम वर्ग के दर्शकों को आकर्षित करना मुश्किल हो जाता है।

4. तुलनात्मक अध्ययन: अन्य क्षेत्रीय सिनेमा से सीख

4.1 दक्षिण भारतीय सिनेमा का मॉडल

दक्षिण भारतीय सिनेमा, विशेष रूप से तमिल और मलयालम सिनेमा, ने पिछले दशक में अभूतपूर्व विकास और अंतरराष्ट्रीय मान्यता प्राप्त की है। इनकी सफलता के मुख्य कारण हैं:

1. विषय-वस्तु की विविधता: सामाजिक मुद्दों, राजनीति, इतिहास, और वैज्ञानिक कथाओं पर आधारित फिल्में।
2. तकनीकी उत्कृष्टता: अंतरराष्ट्रीय स्तर के सिनेमेटोग्राफी, साउंड डिज़ाइन, और विशेष प्रभाव।
3. वितरण रणनीति: अंतरराष्ट्रीय बाज़ारों में विस्तार और डबिंग के माध्यम से अन्य भाषाई दर्शकों तक पहुंच।

4.2 मराठी सिनेमा का पुनरुत्थान

मराठी सिनेमा ने पिछले दशक में एक महत्वपूर्ण पुनरुत्थान देखा है, जिसमें "सैराट", "नटसम्राट", और "फंडरी" जैसी फिल्मों ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसा प्राप्त की है। इस पुनरुत्थान के मुख्य कारण हैं:

1. प्रतिभाशाली निर्देशकों का उभरना: जो समकालीन विषयों पर नवीन दृष्टिकोण से फिल्में बनाते हैं।
2. राज्य सरकार का समर्थन: मराठी फिल्मों के लिए कर छूट और वित्तीय सहायता।
3. मल्टीप्लेक्स नेटवर्क का विस्तार: महाराष्ट्र में मल्टीप्लेक्स की संख्या में वृद्धि और मराठी फिल्मों के लिए
4. अनिवार्य स्क्रीनिंग।

5. समाधान और सिफारिशें

5.1 नीतिगत हस्तक्षेप

भोजपुरी फिल्म उद्योग को मजबूत करने के लिए निम्नलिखित नीतिगत हस्तक्षेप आवश्यक हैं:

1. फिल्म निर्माण के लिए सब्सिडी: अवधी, ब्रज, बुंदेली, और भोजपुरी फ़िल्मों पर कुल लागत का 50 प्रतिशत तक सब्सिडी दी जाती है. बिहार में और अन्य राज्यों में भी इस तरह के पहल किए जाना चाहिए ।
2. कर छूट: सिनेमाघरों और फिल्म निर्माण सुविधाओं के लिए कर छूट और प्रोत्साहन।
3. भोजपुरी फिल्म सिटी: भोजपुरी फिल्मों के निर्माण के लिए समर्पित फिल्म सिटी की स्थापना, जिसमें आधुनिक सुविधाएं हों।

बिहार और उत्तर प्रदेश में मल्टीप्लेक्स के लिए एक निश्चित संख्या में भोजपुरी फिल्मों की स्क्रीनिंग अनिवार्य की जा सकती है, जैसा कि महाराष्ट्र में मराठी फिल्मों के लिए किया गया है।

5.2 तकनीकी और गुणवत्ता उन्नयन

फिल्म प्रशिक्षण संस्थान: भोजपुरी क्षेत्र में फिल्म प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना, जहां निर्देशन, सिनेमेटोग्राफी, एडिटिंग, और अन्य तकनीकी पहलुओं पर प्रशिक्षण दिया जाए।

कार्यशालाएं और सेमिनार: नियमित कार्यशालाओं और सेमिनारों का आयोजन, जहां अंतरराष्ट्रीय स्तर के फिल्म निर्माता अपने अनुभव साझा करें।

लेखक विकास कार्यक्रम: भोजपुरी पटकथा लेखकों के लिए विशेष कार्यक्रम, जिसमें समकालीन विषयों और कहानी कहने के नवीन तरीकों पर ध्यान दिया जाए।

साहित्यिक अनुकूलन: भोजपुरी साहित्य की समृद्ध परंपरा का उपयोग फिल्मों के लिए किया जा सकता है।

5.3 वितरण और मार्केटिंग रणनीतियां

समर्पित ओटीटी प्लेटफॉर्म: भोजपुरी और अन्य क्षेत्रीय फिल्मों के लिए समर्पित ओटीटी प्लेटफॉर्म का विकास।

अंतरराष्ट्रीय ओटीटी के साथ भागीदारी: नेटफ्लिक्स और अमेज़न प्राइम जैसे प्लेटफॉर्म के साथ साझेदारी, जिससे भोजपुरी फिल्मों की पहुंच बढ़े।

E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 2, Issue- 10 | October 2025

सोशल मीडिया अभियान: फेसबुक, इंस्टाग्राम, और यूट्यूब पर सक्रिय अभियान चलाकर युवा दर्शकों को आकर्षित करना।

इन्फ्लुएंसर मार्केटिंग: भोजपुरी क्षेत्र के प्रभावशाली व्यक्तियों के साथ सहयोग करके फिल्मों का प्रचार करना।

5.4 नए बाज़ारों का विकास

अंतरराष्ट्रीय रिलीज़: गल्फ देशों, मॉरीशस और फिजी जैसे स्थानों पर, जहां बड़ी संख्या में भोजपुरी भाषी लोग रहते हैं, फिल्मों की रिलीज़।

अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह: विदेशों में आयोजित होने वाले भारतीय फिल्म समारोहों में भोजपुरी फिल्मों की स्क्रीनिंग।

आधुनिक विषय: युवा दर्शकों से संबंधित समसामयिक विषयों पर फिल्में बनाना।

अनिमेशन और वेब सीरीज़: भोजपुरी में अनिमेटेड फिल्में और वेब सीरीज़ का निर्माण करके नए प्रारूपों का अन्वेषण।

6. केस स्टडी: सफल भोजपुरी फिल्मों का विश्लेषण

6.1 "ससुरा बड़ा पैसेवाला" (2004)

सफलता के कारण: मनोरंजक कथानक, लोकप्रिय संगीत, और मनोज तिवारी जैसे अभिनेताओं का प्रभावशाली अभिनय।

वितरण रणनीति: उत्तर भारत के अधिकांश सिनेमाघरों में व्यापक रिलीज़।

सीख: एक अच्छी कहानी और प्रभावशाली संगीत के साथ, भोजपुरी फिल्में व्यापक दर्शक वर्ग को आकर्षित कर सकती हैं।

6.2 "निरहुआ हिंदुस्तानी " (2014)

सफलता के कारण: नई जोड़ी की धमाकेदार शुरुआत यह फिल्म अम्रपाली दुबे की पहली भोजपुरी फिल्म थी और उनकी केमिस्ट्री निरहुआ के साथ दर्शकों को खूब पसंद आई।।

वितरण: सिनेमाघरों के साथ-साथ टेलीविज़न पर भी व्यापक प्रसारण।

सीख: सामाजिक मुद्दों पर आधारित फिल्में न केवल व्यावसायिक रूप से सफल हो सकती हैं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन में भी योगदान दे सकती हैं।

7. भविष्य की संभावनाएं और निष्कर्ष

भविष्य में, भोजपुरी सिनेमा के विकास के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। युट्यूब, फेसबुक और इंस्टाग्राम जैसे प्लेटफॉर्म पहले से ही भोजपुरी संगीत वीडियो के लिए लोकप्रिय हैं, और इनका उपयोग फिल्मों के प्रचार और वितरण के लिए भी किया जा सकता है।

भोजपुरी फिल्म निर्माताओं के लिए अन्य क्षेत्रीय सिनेमा और बॉलीवुड के साथ सह-निर्माण की संभावनाएं तलाशना महत्वपूर्ण है। ऐसे सहयोग तकनीकी और वित्तीय संसाधनों को साझा करने और अधिक विविध दर्शकों तक पहुंचने में मदद कर सकते हैं।

E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 2, Issue- 10 | October 2025

भविष्य में, भोजपुरी सिनेमा को अपनी विषय-वस्तु में विविधता लाने की आवश्यकता है। इतिहास, विज्ञान फिक्शन, थ्रिलर, और बच्चों की फिल्मों जैसे अन्वेषित क्षेत्रों में नई संभावनाएं हैं।

निष्कर्ष

भोजपुरी सिनेमा, अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और लोकप्रियता के बावजूद, कई गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है। इन चुनौतियों को दूर करने के लिए एक बहु-आयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है:

1. सरकारी स्तर पर नीतिगत समर्थन और वित्तीय प्रोत्साहन।
2. तकनीकी बुनियादी ढांचे में निवेश और आधुनिकीकरण।
3. प्रशिक्षण और कौशल विकास कार्यक्रमों का विस्तार।
4. गुणवत्तापूर्ण कंटेंट और विषय वैविध्य पर ध्यान।
5. डिजिटल प्लेटफॉर्म्स का प्रभावी उपयोग।
6. अंतरराष्ट्रीय बाजारों में पहुंच बढ़ाना।

इन उपायों को अपनाकर, भोजपुरी सिनेमा न केवल अपनी चुनौतियों को दूर कर सकता है, बल्कि एक वैश्विक मंच पर अपनी विशिष्ट पहचान भी स्थापित कर सकता है। यह क्षेत्रीय भाषाओं और संस्कृतियों के संरक्षण के साथ-साथ भारतीय सिनेमा की समग्र समृद्धि में भी योगदान देगा।

शोध कार्य के दौरान अवलोकन की गई कुछ भोजपुरी फिल्मों की सूची।

1- विद्या , आम्रपाली दूबे ।

2 - देवरानी जेठानी, रिंकू घोष एवं काजल राघवानी।

3 - मंडप, दिनेश लाल यादव एवं आम्रपाली दूबे।

4 - ससुरा बड़ा पईसावाला, मनोज तिवारी एवं रानी चटर्जी।

5 - सात सहेलियां, रिंकू घोष, पाखी हेगड़े, रानी चटर्जी, दिनेश लाल यादव निरहुआ।

6 - पंडित जी बताई ना बियाह कब होई, रवि किशन एवं नगमा।

7 - भैया के साली ओढ़नियावाली, पवन सिंह एवं शुभी शर्मा।

8 - प्यार मोहब्बत जिन्दाबाद, पाखी हेगड़े, अंजना सिंह एवं पवन सिंह

9 - संघर्ष, खेसारी लाल यादव, एवं काजल राघवानी।

10 - नईहर, गौरव झा एवं आम्रपाली दूबे

11 - कलेक्टर साहब, प्रमोद प्रेमी यादव एवं संजना पाण्डेय

12 - दुल्हिन वही जो पिया मन भाये, मधु शर्मा, काजल राघवानी, खेसारी लाल यादव।

E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 2, Issue- 10 | October 2025

संदर्भ सूची

1. पटेल रविराज (2015) भोजपुरी फिल्मों का सफरनामा, नई दिल्ली, प्रभात प्रकाशन
2. घोष अविजीत (2010) सिनेमा भोजपुरी, गुरूग्राम हरियाणा, पेंगुइन बुक्स
3. गौरीनाथ (2019) हिंदी सिनेमा में हाशिए का समाज, गाजियाबाद उत्तर प्रदेश, अंतिका प्रकाशन
4. रज़ा राही मासूम (2001) सिनेमा और संस्कृति, दरियागंज नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन
5. कोरे सुलभा (2019) भारतीय समाज हिंदी सिनेमा और स्त्री, गाजियाबाद उत्तर प्रदेश, अंतिका प्रकाशन
6. खान शमीम (2017) सिनेमा में नारी, नई दिल्ली, प्रभात प्रकाशन
7. अनहद विपिन शर्मा (2018) नई सदी का सिनेमा, शाहदरा दिल्ली, अनुज्ञा बुक्स
8. पण्डित मृदुला (2023) सिनेमा और यथार्थ, दरियागंज नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन
9. चौकसे जयप्रकाश (2021) सिनेमा जलसाघर, नोएडा उत्तर प्रदेश सेतु प्रकाशन समूह
10. शर्मा धीरज (2021) फिल्में और संस्कृति, नई दिल्ली प्रभात प्रकाशन